न्यूज़ टुडे

घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES), 2023-24 के लिए फैक्टशीट जारी की गई

इसे **सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI)** द्वारा जारी किया गया है। इसमें अगस्त 2023 से जुलाई 2024 तक पूरे भारत में किए गए दूसरे सर्वेक्षण के निष्कर्ष शामिल हैं।

- पहले सर्वेक्षण (2022-23) के निष्कर्ष फरवरी में जारी किए गए थे।

इस सर्वेक्षण के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- **औसत मासिक प्रति व्यक्ति व्यय (MPCE):** इसका 2023-24 के लिए **4,122 रुपये (ग्रामीण) और 6,996 रुपये (शहरी)** रहने का अनुमान लगाया गया है।
- **MPCE में शहरी-ग्रामीण अंतर कम होना:** यह अंतर **71% (2022-23) से घटकर 70%** (2023-24) हो गया है। यह **ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग संबंधी निरंतर वृद्धि** को दर्शाता है।
- **वर्गों के बीच असमानता:** MPCE के अनुसार रैंकिंग किए जाने पर भारत की ग्रामीण आबादी के सबसे निचले **5% वर्ग** का औसत MPCE **1,677 रुपये** है, जबकि शीर्ष **5% वर्ग के लिए यह 10,137 रुपये** है।
- **राज्यों के बीच असमानता:** MPCE **सिक्किम** में सबसे अधिक और **छत्तीसगढ़** में सबसे कम है।
- **उपभोग की प्रवृत्ति: ग्रामीण (53%) और शहरी (60%) दोनों क्षेत्रों में गैर-खाद्य वस्तुओं** पर अधिक खर्च देखा गया है। इनमें परिवहन, वस्त्र आदि पर अधिक खर्च किया जा रहा है।
  - शहरी क्षेत्रों में **गैर-खाद्य व्यय** के तहत किराए का हिस्सा **7%** है।
  - खाद्य पदार्थों में **पेय और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों** पर अधिक खर्च किया जाता है।
- **उपभोग संबंधी असमानता में कमी:** पिछले वर्ष की तुलना में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में **गिनी गुणांक** में गिरावट देखी गई है।
  - गिनी गुणांक **0 (पूर्ण समानता) से 1 (पूर्ण असमानता)** तक के पैमाने पर परिवारों के बीच **आय असमानता की सीमा को मापता है।**

घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES) के बारे में

- **उद्देश्य:** वस्तुओं और सेवाओं के मामले में घरेलू खपत एवं व्यय के बारे में जानकारी एकत्र करना।
  - इसके तहत गरीबी, असमानता और अपवर्जन को मापने के लिए MPCE को **प्राथमिक संकेतक** के रूप में उपयोग किया जाता है।
- इसे MoSPI के तहत **राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (National Sample Survey Office: NSSO)** द्वारा आयोजित किया जाता है।

हड़प्पाई स्थल राखीगढ़ी में 5,000 साल पुरानी जल प्रबंधन तकनीक का पता चला

इस क्षेत्र में जारी उत्खनन के दौरान टीलों के बीच **जल भंडारण क्षेत्र** की खोज हुई है। इस जल भंडारण क्षेत्र की अनुमानित गहराई **3.5 से 4 फीट** है, जो उस समय की **उन्नत जल प्रबंधन तकनीकों** को दर्शाता है।

- साथ ही, **चौतांग (या दृशावती) नदी** का सूखा हुआ भाग भी खोजा गया है।

हड़प्पा सभ्यता की जल प्रबंधन प्रणालियां

- **विस्तृत जल निकासी प्रणाली:** प्रमुख शहरों में परिष्कृत **ईंटों से बनी भूमिगत नालियां** पाई गई हैं। घरों से जुड़ी ये नालियां **सार्वजनिक नालियों** तक गंदे पानी के निकास के लिए बनाई गई थीं।
- **छोटे बांध:** ये **गुजरात के लोथल** में सिंचाई और पीने के लिए वर्षा जल को संग्रहित करने हेतु स्थानीय लोगों द्वारा बनाए गए थे।
- **गोदीबाड़ा (Dockyard): साबरमती नदी के पास लोथल में एक पंक्तिबद्ध संरचना** मिली है, जिसमें जल के प्रवेश और निकास के लिए नालिकाओं (Channels) के साक्ष्य मिले हैं।
- **नालिकाएं और जलाशय: गुजरात के धोलावीरा में पत्थरों से बने जलाशय** मिले हैं। इनमें वर्षा जल या पास की नदियों के पानी को संग्रहित किया जाता था।
  - यह **जल संरक्षण, संग्रहण और भंडारण** की उन्नत हाइड्रोलिक तकनीक का उदाहरण है।
- **तालाब और कुएं: मोहनजोदड़ो** में, तालाबों में एकत्रित वर्षा जल को कुशल जल निकासी प्रणाली के माध्यम से प्रत्येक घर के कुओं तक पहुंचाया जाता था।
  - महास्नानागार **"ईंट के फर्श** से बना एक बड़ा हौज (Tank) था, जो संभवतः धार्मिक कार्यों के दौरान सामूहिक स्नान के लिए बनाया गया था। यह प्राचीन जल के विशाल हौज का एक उल्लेखनीय उदाहरण है।

राखीगढ़ी के बारे में

- **अवस्थिति: यह हरियाणा के हिसार जिले में घग्गर-हकरा नदी के मैदान** में स्थित हड़प्पा सभ्यता के सबसे पुराने और सबसे बड़े शहरों में से एक है।
- **मुख्य खोजें: पुरातात्विक टीले, कंकाल अवशेष,** जिनसे हड़प्पा युग के एकमात्र DNA साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
  - साथ ही शिल्प कार्य क्षेत्रों, आवासीय संरचनाओं, सड़कों, जल निकासी प्रणालियों, शवाधान स्थलों आदि के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।

मध्य प्रदेश 15 बाघों को राजस्थान, ओडिशा और छत्तीसगढ़ में स्थानांतरित करेगा

बाघों को मध्य प्रदेश के **बांधवगढ़, पन्ना, कान्हा और पेंच टाइगर रिजर्व से स्थानांतरित** किया जाएगा।

- यह **एनिमल एक्सचेंज प्रोग्राम** के तहत किया जाएगा।
- यह अब तक किसी भी राज्य से सर्वाधिक संख्या में बाघों का स्थानांतरण होगा।
- देश में बाघों की **सर्वाधिक संख्या (785) मध्य प्रदेश** में है, इसलिए मध्य प्रदेश इस परियोजना में योगदान दे रहा है।

अंतर्राज्यीय बाघ स्थानांतरण परियोजनाओं (ISTTPs) के बारे में

- **उद्देश्य:**
  - **बाघों को पुनः बसाना:** उन क्षेत्रों में बाघों को फिर से बसाना, जो कभी उनके प्राकृतिक पर्यावास थे, लेकिन समय के साथ वहां उनकी आबादी या तो बहुत कम हो गई या वे पूरी तरह से विलुप्त हो गए।
  - **मौजूदा आबादी को बढ़ाना:** लंबे समय तक बाघों के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए मौजूदा बाघों की संख्या में वृद्धि करना।
- पहली **बाघ स्थानांतरण परियोजना 2018** में शुरू की गई थी। इसके तहत **कान्हा और बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व** से दो बाघों को **ओडिशा के सतकोसिया टाइगर रिजर्व** में स्थानांतरित किया गया था।
- **राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA)** ऐसी परियोजनाओं को सुगम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बाघों को स्थानांतरित करने के लाभ

- **पारिस्थितिक संतुलन:** इससे बाघों की कम आबादी वाले रिजर्व में शिकारी-शिकार संतुलन को फिर से स्थापित करने में मदद मिलती है।
- **मानव-वन्यजीव संघर्ष को रोकना:** इससे बाघों की अत्यधिक आबादी वाले रिजर्व में मानव-बाघ संघर्ष को कम किया जा सकता है।
- **भू-परिदृश्यों का पुनरुद्धार:** इससे उन क्षेत्रों का पुनरुद्धार किया जा सकता है, जहां बाघ स्थानीय रूप से विलुप्त हो गए थे।

बाघों को स्थानांतरित करने से जुड़ी चिंताएं

- **स्थानीय समुदायों का विरोध:** इससे टाइगर रिजर्व के पास रहने वाले ग्रामीण लोगों को अपनी जान का खतरा महसूस हो सकता है।
- **मौजूदा बाघों के साथ संघर्ष:** इसके चलते नए बाघों और मौजूदा बाघों के मध्य अपने इलाकों को लेकर संघर्ष हो सकता है। इससे वे इंसानी आबादी वाले इलाकों की ओर रुख करने लगते हैं।
- **अन्य:** खराब वन प्रबंधन जैसे बाघ के लिए शिकार की कम उपलब्धता, आदि।

RBI के अनुसार सरकार ट्रेजरी बिल (T-बिल) के माध्यम से 3.94 लाख करोड़ रुपये उधार लेगी

हाल ही में, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने **T-बिल जारी करने के लिए कैलेंडर** अधिसूचित किया। ट्रेजरी बिल यानी **T-बिल एक प्रकार की सरकारी प्रतिभूति (G-Sec)** है।

भारत में सरकारी प्रतिभूति (G-Sec) बाजार

- **सरकारी प्रतिभूतियों (G-Secs) के बारे में:** ये केंद्र या राज्य सरकारों द्वारा जारी की जाती हैं। ये प्रतिभूतियां वास्तव में सरकार पर उधार होती हैं, क्योंकि सरकार को इन प्रतिभूतियों की मैच्योरिटी पर इनके धारकों को मूलधन वापस करना पड़ता है। इन प्रतिभूतियों की खरीद-बिक्री की जा सकती है।
- **जारीकर्ता:** RBI इन्हें अपने इलेक्ट्रॉनिक **ई-कुबेर प्लेटफ़ॉर्म** पर जारी करके इनकी नीलामी करता है।
  - RBI की **पब्लिक डेब्ट रजिस्ट्री (PDO)** इन प्रतिभूतियों की रजिस्ट्री या डिपॉजिटरी के रूप में कार्य करती है।
- **नीलामी में भाग लेने वाले प्रमुख प्रतिभागी:** वाणिज्यिक बैंक, प्राथमिक डीलर, बीमा कंपनियां, सहकारी बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, म्यूचुअल फंड, रिटेल निवेशक, आदि।
  - **रिटेल निवेशकों को गैर-प्रतिस्पर्धी बोली सेक्शन के तहत आवेदन की अनुमति** दी गई है।

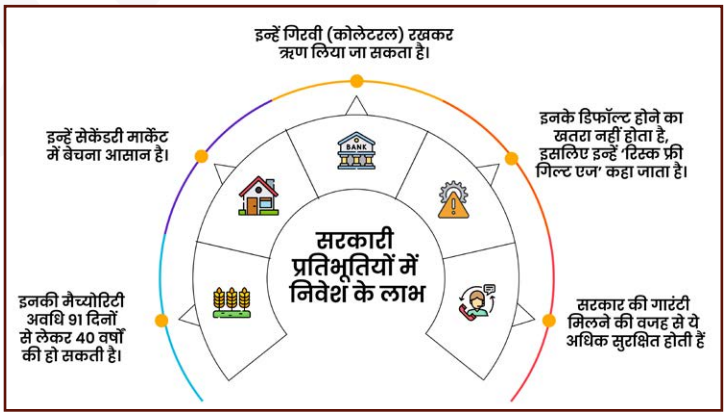

सरकारी प्रतिभूतियों (G-Secs) के प्रकार

- **अल्पावधिक प्रतिभूतियां:** ये **एक वर्ष से कम समय में मैच्योर** हो जाती हैं। **T-बिल** इसका उदाहरण है।
  - **ट्रेजरी बिल (T-बिल) के बारे में**
    - यह भारत सरकार द्वारा जारी की जाने वाली **मनी मार्केट और अल्पावधिक डेब्ट इंस्ट्रूमेंट या ऋण प्रतिभूति** है।
    - ये **जीरो कूपन बॉण्ड या प्रतिभूतियां** होती हैं। इन पर कोई **ब्याज देय नहीं** होता है।
      - **जीरो कूपन बॉण्ड को अंकित मूल्य पर डिस्काउंट देते हुए जारी** किया जाता है। मैच्योरिटी पर धारक को अंकित मूल्य का भुगतान किया जाता है। इस तरह **डिस्काउंट ही वास्तव में लाभ** के रूप में प्राप्त होता है।
    - ये प्रतिभूतियां **तीन अवधियों में मैच्योर होने वाली होती हैं;** 91 दिन, 182 दिन और 364 दिन।
  - **नकद प्रबंधन बिल (CMBs)**
    - ये **अल्पावधि** वाली प्रतिभूतियां होती हैं। ये **91 दिनों से कम अवधि** में मैच्योर हो जाती हैं। इसे भारत सरकार ने **2010** में शुरू किया था। ये सरकार की **नकदी संबंधी जरूरतों में तात्कालिक कमी को पूरा करने के लिए** जारी की जाती हैं।
- **दीर्घावधिक प्रतिभूतियां:** ये **एक वर्ष या इससे अधिक वर्षों में मैच्योर** होती हैं। इनके उदाहरण हैं- **सरकारी बॉण्ड या दिनांकित प्रतिभूतियां।**
  - **दिनांकित सरकारी प्रतिभूतियां:** इन पर **ब्याज दर या तो निश्चित होती है या बदलती** रहती (फ्लोटिंग) हैं। **ब्याज का भुगतान प्रत्येक छह माह** पर किया जाता है। ये प्रतिभूतियां **5 से 40 वर्ष में मैच्योर** होती हैं।
  - **राज्य विकास ऋण (SDL):** ये **राज्य सरकारों द्वारा जारी की जाने वाली दिनांकित प्रतिभूतियां** होती हैं। **ब्याज का भुगतान प्रत्येक छह माह** पर किया जाता है।
- **नोट:** भारत में **केंद्र सरकार T-बिल और बॉण्ड या दिनांकित प्रतिभूतियां,** दोनों जारी करती है। वहीं **राज्य सरकारें केवल बॉण्ड या दिनांकित प्रतिभूतियां** जारी करती हैं, जिन्हें SDL कहा जाता है।

पार्कर सोलर प्रोब सूर्य के करीब उड़ान भरने वाला पहला अंतरिक्ष यान बना

नासा के पार्कर सोलर प्रोब ने **उपसौर (Perihelion) बिंदु** पर सोलर फ्लाई का प्रदर्शन किया।

- **उपसौर** किसी ग्रह या अन्य खगोलीय पिंड की कक्षा में उस बिंदु को संदर्भित करता है, जिस पर वह सूर्य के सबसे निकट होता है।
  - **उपसौर का विपरीत अपसौर (Aphelion)** होता है, जिसमें कोई ऑब्जेक्ट या पिंड सूर्य से सबसे दूर होता है।
- इस मिशन के दौरान पार्कर सोलर प्रोब की गति लगभग **700,000 किलोमीटर प्रति घंटा** थी। ऐसा करके वह इतिहास में **सबसे तेज मानव निर्मित ऑब्जेक्ट** बन गया है।
- यह अंतरिक्ष यान **शुक्र ग्रह के नजदीक से 7 बार गुजरने (Flybys)** के दौरान **गुरुत्वाकर्षण बल की मदद से गति और दिशा को नियंत्रित कर** सूर्य के इतने करीब पहुंचा है।

पार्कर सोलर प्रोब (2018) के बारे में

- **उद्देश्य:** इसे सूर्य के बाहरी वायुमंडल, जिसे **कोरोना** कहा जाता है का अध्ययन करने के लिए लॉन्च किया गया है। इसका उद्देश्य **सौर पवनों के बारे में हमारी समझ को बेहतर** बनाना है।
  - सौर पवनें सूर्य के कोरोना से **प्रोटॉन्स** और **इलेक्ट्रॉन्स** का सतत प्रवाह है।
- **प्रमुख वैज्ञानिक उपकरण:** फ़ील्ड्स एक्सपेरिमेंट (FIELDS), इंटीग्रेटेड साइंस इन्वेस्टीगेशन ऑफ द सन (ISOIS), आदि।

सौर गतिविधि का अध्ययन करना क्यों महत्वपूर्ण है?

- **अंतरिक्ष मौसम को समझना: सौर ज्वालाएं और कोरोनल मास इजेक्शन (CMEs)** जैसी सौर गतिविधियां अंतरिक्ष मौसम को प्रभावित करती हैं। इससे सैटेलाइट्स ठीक से कार्य नहीं कर पाती हैं। अत: इन सौर गतिविधियों का अध्ययन करना महत्वपूर्ण हो जाता है।
- **इलेक्ट्रिक ग्रिड और प्रौद्योगिकी सुरक्षा उपाय:** सौर गतिविधियों के कारण उत्पन्न होने वाले भू-चुंबकीय तूफान विद्युत ग्रिड्स में करंट उत्पन्न कर सकते हैं। इससे ब्लैकआउट या भारी उपकरण क्षति हो सकती है।
- **अन्य:** अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना आदि।

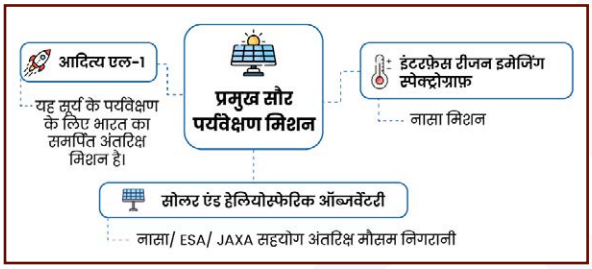

पिछले दो वर्षों में रुपये में एक दिन में सबसे अधिक गिरावट दर्ज की गई

27 दिसंबर 2024 को **अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये की विनिमय दर में 23 पैसे की गिरावट** दर्ज की गई और यह **85 रुपये** के ऊपर पहुंच गया। इससे पहले रुपये में एक दिन में **68 पैसे की सबसे बड़ी गिरावट 2 फरवरी, 2023 को दर्ज** की गई थी।

- **विनिमय दर** किसी मुद्रा के दूसरी मुद्रा के सापेक्ष मूल्य को दर्शाती है। इस तरह वास्तव में विनिमय दर एक मुद्रा की कीमत को दूसरी मुद्रा के संदर्भ में व्यक्त करती है।

रुपये के मूल्यह्रास के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारक

- **अमेरिकी डॉलर का मजबूत होना:** अमेरिकी केंद्रीय बैंक 'फेडरल रिजर्व' ने सख्त मौद्रिक नीति अपनाते हुए ब्याज दरों को बढ़ाया है। इससे निवेशक अधिक ब्याज के लालच में उभरते बाजारों से पूंजी निकाल रहे हैं।
  - इसका एक उदाहरण **भारत से विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) का बाहर** जाना है।
- **बढ़ता व्यापार घाटा:** कच्चे तेल के अधिक आयात के कारण भारत का व्यापार घाटा बढ़ गया है।
- **अन्य कारक:** भारत में **मुद्रास्फीति दर उच्च** बनी हुई है।
  - गौरतलब है कि **जब मुद्रास्फीति की दरें अधिक होती हैं, तो मुद्रा का मूल्य आमतौर पर कम** हो जाता है, आदि।

रुपये के मूल्यह्रास का प्रभाव

- **नकारात्मक प्रभाव**
  - **आयात महंगा होना:** रुपया कमजोर होने पर आयात (विशेषकर कच्चे तेल के आयात) के लिए अधिक रुपयों का भुगतान करना पड़ता है।
    - इससे **व्यापार घाटा और भी बढ़** जाता है।
  - **अन्य प्रभाव: विदेशी ऋण लेना महंगा** पड़ जाता है। इसके अलावा, **मुद्रास्फीति और बढ़** जाती है, क्योंकि देश में आयातीत **वस्तुएं महंगी** हो जाती हैं, आदि।
- **सकारात्मक प्रभाव**
  - **निर्यात को बढ़ावा:** डॉलर के मामले में घरेलू कंपनियों के लिए उत्पादन लागत या सेवा लागत कम हो जाती है। इससे विदेशी बाजारों में निर्यात सस्ता हो जाता है और निर्यात को बढ़ावा मिलता है।
  - **विदेशों से प्राप्त रेमिटेंस (विप्रेषण) का मूल्य बढ़ जाता है:** उदाहरण के लिए अप्रवासी भारतीयों (NRIs) द्वारा डॉलर में धन भेजा जाता है। इसके बदले उनके परिवार को अधिक रुपये प्राप्त होते हैं।

रुपये को स्थिर करने के लिए किए जा सकने वाले उपाय

- **RBI द्वारा डॉलर की प्रत्यक्ष बिक्री:** रुपये के मूल्य में गिरावट को रोकने के लिए **घरेलू बाजार में अमेरिकी डॉलर की आपूर्ति बढ़ाई** जा सकती है।
- **विदेशी मुद्रा स्वैप:** RBI विदेशी मुद्रा भंडार में व्यापक कमी किए बिना डॉलर की लिक्विडिटी को बढ़ाने या कम करने के लिए **करेंसी स्वैप खरीद-बिक्री** का उपयोग कर सकता है।
- **विदेशी निवेश आकर्षित करना:** कर छूट जैसे नीतिगत प्रोत्साहनों से देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और पोर्टफोलियो निवेश बढ़ाया जा सकता है।

अन्य सुर्खियां

पश्चिमी विक्षोभ

हाल ही में, मजबूत पश्चिमी विक्षोभ के कारण **हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के कुछ हिस्सों में बर्फबारी** हुई है, जिसके चलते मौसम में बदलाव आया है।

पश्चिमी विक्षोभ के बारे में

- **इसके बारे में:** पश्चिमी विक्षोभ **भूमध्यसागरीय-क्षेत्र** में उत्पन्न होने वाला **बहिरूष्ण-कटिबंधीय (Extratropical) तूफान** है। वहां से ये तूफान **पूर्व दिशा में भारतीय उपमहाद्वीप की ओर बढ़ते** हैं।
  - पश्चिमी विक्षोभ के कारण **उत्तर-पश्चिमी भारतीय उपमहाद्वीप में बिना मानसून वाले मौसम में वर्षा** होती है।
  - बहिरूष्ण-कटिबंधीय तूफ़ान **निम्न दाब प्रणालियां हैं।**
- **गति:** इसमें **पवनों का प्रवाह पूर्व दिशा** की ओर होता है। ऐसा **पश्चिमी पवनों (उपोष्णकटिबंधीय जेट)** के कारण होता है।
- **मौसम का प्रभाव:** इस दौरान भारत के **उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी भागों में वर्षा, बर्फबारी या ओलावृष्टि** देखने को मिलती है।
- **भारत के लिए महत्त्व:**
  - पश्चिमी विक्षोभों के कारण होने वाली वर्षा भारत में **रबी फसलों (जैसे- गेहूं, सरसों) के लिए काफी लाभकारी** मानी जाती है।
  - इसके अलावा, हिमालयी क्षेत्र में हुई बर्फबारी से **ग्लेशियरों के पिघलने के चलते कम हुई बर्फ की भरपाई** भी होती है।

स्वामित्व (SVAMITVA) योजना

हाल ही में, प्रधान मंत्री ने स्वामित्व योजना के तहत **50 लाख से अधिक संपत्ति कार्ड वितरित** किए।

स्वामित्व (SVAMITVA) योजना

- **योजना के बारे में:** SVAMITVA (गांवों का सर्वेक्षण और ग्रामीण क्षेत्रों में उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ मानचित्रण योजना) एक **केंद्रीय क्षेत्रक** योजना है।
- **मंत्रालय:** पंचायती राज मंत्रालय।
- **उद्देश्य:**
  - **आबादी वाले ग्रामीण क्षेत्रों में संपत्ति मालिकों को कानूनी स्वामित्व कार्ड जारी करके संपत्ति का स्पष्ट स्वामित्व स्थापित** करना।
  - इसमें **ग्रामीण परिवारों के लिए 'अधिकार अभिलेख' जारी करने हेतु भू-खंडों के मानचित्रण का कार्य ड्रोन** से किया जा रहा है।
- **संभावित लाभ:** संपत्तियों के मुद्रीकरण की सुविधा और बैंक ऋण को सक्षम बनाना; संपत्ति संबंधी विवादों को कम करना; व्यापक ग्राम स्तरीय योजना निर्माण आदि।
- **प्रगति**
  - योजना के तहत 92% लक्षित गांवों का ड्रोन का उपयोग करके सर्वेक्षण किया गया है।
  - **2.2 करोड़ संपत्ति कार्ड** तैयार किए गए हैं।

ई-वे बिल (E-Way Bill)

हाल ही में, भारतीय रेलवे की **माल ढुलाई परिचालन सूचना प्रणाली को वस्तु एवं सेवा कर (GST) की ई-वे बिल प्रणाली के साथ एकीकृत** किया गया है।

ई-वे बिल के बारे में

- यह एक प्रकार का **डॉक्यूमेंट** है। इसे **50,000 रुपये से अधिक मूल्य की वस्तुओं का परिवहन** कर रहे ट्रांसपोर्टर को अपने पास रखना होता है।
- इसे **वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम की धारा 68** द्वारा अनिवार्य किया गया है।
- इसे माल ढुलाई शुरू करने से पहले **पंजीकृत व्यक्तियों या ट्रांसपोर्टर द्वारा GST कॉमन पोर्टल से जनरेट** किया जाता है।

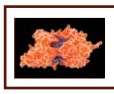

एंजाइम्स

हाल ही में, भारत सरकार के **जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) ने बायोमैन्युफैक्चरिंग और बायोफाउंड्री पहलों पर एक वेबिनार सीरीज** आयोजित की थी।

- इसकी थीम **"एंजाइमों की बायोमैन्युफैक्चरिंग"** थी।
- बायोमैन्युफैक्चरिंग और बायोफाउंड्री, **BioE3 नीति के तहत एक महत्वपूर्ण डोमेन** है।
  - BioE3 से आशय है- **बायोटेक्नोलॉजी फॉर इकॉनमी, एनवायरनमेंट एंड एम्प्लॉयमेंट।**

एंजाइम के बारे में

- यह एक **जैविक उत्प्रेरक यानी प्रोटीन** है। यह **कोशिका में विशिष्ट रासायनिक अभिक्रिया की दर को तेज** करता है।
- ये लगातार उपयोग किए जाते हैं और अभिक्रिया के दौरान नष्ट नहीं होते हैं।
- **उदाहरण:** लाइपेज, एमाइलेज, प्रोटीज, आदि।
- **उपयोग:**
  - **औद्योगिक क्षेत्रक में:** शराब के किण्वन में, पनीर बनाने में, आदि।
  - **फार्मास्यूटिकल में:** दवाओं के उत्पादन में, आदि।

एस्बेस्टस

यूनाइटेड स्टेट्स फ़ूड एंड ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन (USFDA) ने **कॉस्मेटिक्स को एस्बेस्टस-मुक्त** रखने के लिए नए परीक्षण नियमों का प्रस्ताव किया।

एस्बेस्टस के बारे में

- एस्बेस्टस **प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले खनिज फाइबर्स** का एक समूह है।
  - एस्बेस्टस के **छह मुख्य रूप** हैं। वर्तमान में उपयोग में आने वाला मुख्य एस्बेस्टस **'क्राइसोटाइल' (सफेद एस्बेस्टस)** है।
- **मुख्य गुण:** ऊष्मा रोधी और जंग-रोधक।
- **उपयोग:** निर्माण सामग्री में, ऑटोमोबाइल उद्योग में, आदि।
- **स्वास्थ्य को खतरा:** एस्बेस्टस के संपर्क में आने से फेफड़ों का कैंसर, लैरिंजियल (स्वरयंत्र) कैंसर और ओवेरियन कैंसर; **मेसोथेलियोमा** (फुफ्फुस और पेरिटोनियल लाइनिंग का कैंसर) का खतरा बढ़ जाता है।

प्रीपेड पेमेंट इंस्ट्रूमेंट्स (PPI)

RBI ने प्रीपेड पेमेंट इंस्ट्रूमेंट्स (PPI) धारकों को **थर्ड-पार्टी मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) के जरिये भुगतान करने और प्राप्त करने की अनुमति** दी है।

प्रीपेड पेमेंट इंस्ट्रूमेंट्स (PPIs) के बारे में

- PPIs वास्तव में अग्रिम रूप से जमा पैसे या वैल्यू के बदले में वस्तुओं और सेवाओं की खरीद, वित्तीय सेवाओं के संचालन, पैसा भेजने जैसी सुविधाएं प्रदान करते हैं।
  - इनके उदाहरण हैं- **मोबाइल वॉलेट, डिजिटल वॉलेट, गिफ्ट कार्ड, आदि।**
- PPIs **बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों** द्वारा जारी किए जा सकते हैं।
- **इनके दो प्रकार हैं:**
  - **लघु PPIs:** ये PPI धारक से बहुत कम विवरण प्राप्त करने के बाद जारी किए जाते हैं; तथा
  - **अपने ग्राहक को जानो (KYC) संबंधी सभी आवश्यकताएं पूरी होने पर** जारी किए जाने वाले PPIs.

पी.एम. केयर्स फंड

नवीनतम ऑडिट किए गए खातों के अनुसार, **पी.एम. केयर्स (प्रधान मंत्री नागरिक सहायता और आपातकालीन स्थिति राहत कोष) फंड में 2022-23 में 912 करोड़** रुपये प्राप्त हुए हैं।

पी.एम. केयर्स फंड के बारे में

- यह **पंजीकरण अधिनियम, 1908** के तहत स्थापित एक **सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट** है।
  - यह सरकारी **बजट आवंटन का उपयोग नहीं** करता है।
- **उद्देश्य:** आपात स्थिति या आपदा के दौरान राहत और सहायता प्रदान करना।
- **अध्यक्ष और सदस्य: प्रधान मंत्री इसका पदेन अध्यक्ष** होता है, तथा सदस्यों में **रक्षा मंत्री, गृह मंत्री और वित्त मंत्री** शामिल हैं।
- **कर लाभ:** इसमें किया गया **दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के तहत 100% कर छूट के लिए पात्र** हैं।
  - इस फंड में किया गया दान **कंपनी अधिनियम, 2013** के तहत **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व CSR व्यय** के रूप में भी माना जाएगा।
- यह फंड **सूचना के अधिकार (RTI) के दायरे** में नहीं आता है।

मैन्युफैक्चर्ड सैंड (M-SAND)

हाल ही में, **राजस्थान सरकार ने संधारणीय निर्माण और अवसंरचना के लिए एम-सैंड, 2024 नीति** जारी की।

मैन्युफैक्चर्ड सैंड (M-SAND) के बारे में

- **क्या है एम-सैंड:** यह चट्टानों या खदान के पत्थरों को पीसकर बारीक पाउडर में बदल कर बनाया जाता है। इसका इस्तेमाल कंक्रीट निर्माण में नदी की रेत के विकल्प के रूप में किया जाता है।
- **मुख्य लाभ:**
  - **अनुकूल तरीके से कार्य करती है:** इसमें सीमेंट के सेटिंग समय और गुणों को नुकसान पहुंचाने वाले कार्बनिक एवं घुलनशील यौगिक नहीं होते हैं। इसलिए, निर्माण कार्यों के लिए उपयुक्त है।
  - **मजबूत:** इसमें **मिट्टी, धूल और गाद कोटिंग जैसी अशुद्धियां नहीं** होती हैं।
  - **पर्यावरण के अनुकूल:** इसे प्राप्त करने के लिए नदी के खनन की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इससे भूजल की कमी, नदी में जल की कमी जैसी पर्यावरणीय आपदाओं को टाला जा सकता है।

सुर्ख़ियों में रहे स्थल

सोमालिया (राजधानी: मोगादिशु)

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने **सोमालिया में एक नए शांति मिशन** को अधिकृत किया।

भौगोलिक अवस्थिति:

- यह अफ्रीका महाद्वीप की मुख्य भूमि के **सबसे पूर्व** में स्थित देश है। यह देश **हॉर्न ऑफ अफ्रीका** प्रायद्वीप का हिस्सा है।
- **सीमावर्ती देश:** इसके उत्तर-पश्चिम में **जिबूती;** पश्चिम में **इथियोपिया;** और दक्षिण-पश्चिम में **केन्या** स्थित है।
- **सीमावर्ती जल निकाय:** अदन की खाड़ी और हिंद महासागर।

भौगोलिक विशेषताएं:

- **सबसे ऊंची चोटी:** माउंट शिम्बिरिस। इसे माउंट सुरुद कैड के नाम से भी जाना जाता है।
- **प्रमुख नदियां:** जुब्बा और शबेले।
- अदन की खाड़ी के समानांतर तटीय मैदानों को **गुबन** के नाम से जाना जाता है।